पौध तैयार करना

रबी (मार्च-अप्रैल में) की फसल की कटाई के बाद अगर पुदीना लगाना हो तो प्रति बेड (पौध) तैयार करना पड़ती है। एक क्विंटल सकर्स प्रति हेक्टेयर क्षेत्र के हिसाब से छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लेते हैं ध्यान रखे कि हर टुकड़े में एक गाँठ हो इसे 200 वर्ग मी. के क्षेत्र में लगाकर पौध तैयार करते हैं। रोपणी में अच्छी तरह पानी भर देते हैं तथा भूमि दलदली बना लेते हैं फिर इसमें सकर्स बिछाकर झाड़ू या अरहर के तनों से हल्का पीट कर गाँठों को मिट्टी में धंसा देते हैं। इस तरह 35-40 दिनों में पौध खेत में लगाने लायक हो जाती है। सिंचाई 15-20 दिन के अंतराल से तथा गर्मी में 10 दिन के अंतर में करें।

फसल विदोहन

100-200 दिनों में जब पौधों पर फल आने लगे तब ही पौधे को 4-5 से.मी. ऊँचाई से काट लेना चाहिये। कटाई करना ठीक होता है नहीं तो तेल की गुणवत्ता व उत्पादन पर प्रभाव पड़ता है। मई में कटाई करने के उपरांत दूसरी कटाई 60-70 दिन के बाद की जाती है। पहली कटाई के 10 दिन पहले से पानी देना बंद कर देना चाहिये। फसल काटकर एक दिन पड़े रहने देना चाहिये। फसल को छाया में 2 दिन सुखाना चाहिये। 1से 3 दिन के भीतर आसवन कर लें, नहीं तो तेल की गुणवत्ता में कमी आ जाती है।

आर्थिकी

व्यय प्रति हेक्टेयर	-	15,000 रुपये
उत्पादन		
तेल/हेक्टे./वर्ष	-	150 किलो ग्रा.
फसल उत्पादन	-	300 से 400 कि.ग्रा. हरा
आय/हेक्टेयर	-	रु. 55,000
लाभ/हेक्टे.	-	रु. 40,000

•••

Printed at : Reliable Printed Products, Jbp. ✆ : 315501

एस.एफ.आर.आई. प्रचार पत्रिका - 29

मेन्था या पोदीना

(मेन्था आर्वेंसिस)

जैव विविधता एवं
औषधी पौध शाला

म.प्र. राज्य वन अनुसंधान
संस्थान, जबलपुर

2001

मेन्था या पोदीना
(मेन्था आर्वेंसिस)

पोदीना को अंग्रेजी में मेन्था कहते हैं जिसका वानस्पतिक नाम मेन्था आर्वेंसिस है। यह जापानी पोदीना नाम से भी प्रचलित है। यह लेबियेटी कुल का पौधा है। पोदीना की खेती भारत में सर्वाधिक उत्तर प्रदेश में सीतापुर, लखनऊ, बाराबंकी, बेरली-बदायु, फैजाबाद जनपदों में लगभग। लाख हेक्टेयर भूमि में की जाती है। जहाँ लगभग भारत के 90 प्रतिशत तेल का उत्पादन किया जाता है। भारत अब विश्व के मेंथा उत्पादक और निर्यातक देशों में पहले स्थान पर गिना जाने लगा है।

आकारिकी (मॉरफोलाजी)

यह एक शाकीय लगभग 60 से.मी. ऊँचा पौधा है। पत्ती छोटी, वृन्तयुक्त (डंठल) दँतेदार किनार युक्त होती है। फूल हल्के बैगनी रंग के छोटे-छोटे गुच्छों में पाये जाते हैं जो पत्ती के कक्ष से निकलते हैं। इसकी जड़ें रेशेदार होती हैं।

औषधीय गुण एवं उपयोग

पोदीने में पाये जाने वाले तेल जिसे मेन्थाल के नाम से जाना जाता है का व्यापक इस्तेमाल सर्दी-खाँसी से संबंधित दवाईयों में तथा सौन्दर्य प्रसाधनों, चूसने वाली गोलियों आदि में किया जाता है। जापानी पोदीने में 80-85 प्रतिशत तक मेन्थाल पाया जाता है। पुदीने का रस (तेल) पेट के विकार, सिर दर्द में गाठिया में एन्टीसेप्टिक तथा स्वांस नली को खोलने में अत्यंत उपयोगी है।

कृषि तकनीकि

मेन्था की खेती ऊष्ण तथा समशीतोष्ण जलवायु युक्त प्रदेशों जहाँ 20 से 40 डिग्री से.ग्रे. तापमान रहता हो आसानी से की जाती है। बलुई दोमट से भुरभुरी दोमट मिट्टी जिसमें अच्छी जल निकासी की व्यवस्था हो जैसा खेत इसके लिये उपयुक्त है। सिंचित भूमि को खेती के पूर्व हल द्वारा आड़ा-तिरछा जोत कर मिट्टी को भुरभुरा बना लिया जाता है तथा खेत को खरपतवार एवं फफूंदनाशक कर लेना अति आवश्यक है। इसमें 10-20 टन/एकड़ गोबर खाद मिला लेना चाहिये।

पौध सामग्री का उत्पादन

अच्छी फसल के लिये अच्छी पौध सामग्री होना अति आवश्यक है इसे प्रायः सकर्स (भूस्तारी जड़) से लगाया जाता है। जिसको 15 अगस्त से 15 सितंबर के बीच तैयार करना उपयुक्त होता है। खेत की जुताई कर पौध लगाने से पूर्व 20 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 40 कि.ग्रा. पोटाश खेत में मिला दे। खेत में - x 25 से.मी. के अंतराल में क्यारियों पर सकर्स (जड़युक्त) की रोपाई करते हैं। प्रति हेक्टेयर 4-5 क्विंटल सकर्स की आवश्यकता होती है। आवश्यकतानुसार निंदाई-गुड़ाई सिंचाई करते हैं। जनवरी के मध्य में पौधों का ऊपरी भाग काट कर जड़ों को खोद लेते हैं, इन्हीं जड़ों से पौध तैयार कर लेते हैं। इस तरह प्रति हेक्टेयर 110 क्विंटल सकर्स उत्पन्न होते हैं।